राष्ट्रियपण्डित (राष्ट्रपति-पुरस्कृत) श्री व्रजवल्लभ द्विवेदी के द्वारा

संपादित (स), अनूदित (अ) एवं रचित (र) ग्रन्थ

देश एवं विदेश के विद्वानों की संमतियाँ
एवं
प्राप्त पुरस्कार

(स) प्राचीनं निर्णयपत्रम्---- (धर्मशास्त्र) लखनऊ के रेजीडेंट के द्वारा प्रेषित वादपत्र का ई.इ. कम्पनी द्वारा स्थापित संस्कृत पाठशाला के विद्वानों का समाधान, सारस्वती सुषमा, व. 6, अ. 3-4; तन्त्रयात्रा में पुनः मुद्रित ।

(स) पथिकजनपातकचिन्तनस्मृति—— (यात्रावर्णन) महेश भट्ट विरचित। नादिरशाह के कत्लेआम का आँखों देखा विवरण भी। सा. सु., व. 7, अ.2; तन्त्रयात्रा में पुनः मुद्रित ।

(स) प्रत्यङ्गिरासूक्त—— पिप्पलाद शाखीय, वासुदेवद्विवेदविरचित व्याख्यान सहित। सा. सु., व 7, अ. 3-4.

(स) काण्वसंहिताभाष्यसंग्रह—— आनन्दबोध भट्टोपाध्याय विरचित। 31-40 अध्याय । सा. सु., व. 7, अ.2 से व. 9, अ. 2 पर्यन्त ।

(स) भारोत्थापनयन्त्रनिर्माणविधि—— (शिल्पशास्त्र) देवीसिंह महापति विरचित। डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल लिखित प्राक्कथन । सा. सु., व. 12 अ. 2; तन्त्रयात्रा में पुनः मुद्रित ।

(स) गैरिकसूत्र—— (कला) गंगाराम जड़ी विरचित। पं. रघुनाथ शर्मा द्वारा विरचित विवरण सहित। सा. सु., व. 12, अ. 3-4; तन्त्रयात्रा में पुनः मुद्रित ।

(स) नित्याषोडशिकार्णव—— (त्रिपुरा तन्त्र) शिवानन्द की ऋजुविमर्शिनी और विद्यानन्द की अर्थरत्नावली नामक टीकाओं के साथ । यहाँ परिशिष्ट भाग में दीपकनाथ सिद्ध कृत त्रिपुरसुन्दरीदण्डक का, शिवानन्द कृत सुभगोदय, सुभगोदयवासना और सौभाग्यहृदयस्तोत्र का तथा अमृतानन्द कृत सौभाग्यसुधोदय एवं चिद्विलासस्तव का भी प्रकाशन हुआ है। 120 पृष्ठ के संस्कृत उपोद्घात एवं टिप्पणी आदि के साथ इसका प्रकाशन सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय की योगतन्त्र-ग्रन्थमाला में हुआ है । इसको उत्तरप्रदेश प्रशासन का कालिदास पुरस्कार प्राप्त हुआ है। 1967 ई. में प्रथम तथा सन् 1984 द्वितीय संस्करण ।

(स) महार्थमंजरी—— (शाक्त क्रमतन्त्र) महेश्वरानन्द कृत स्वोपज्ञ व्याख्या के साथ, संस्कृत उपोद्घात एवं परिशिष्टों से संयुक्त। सं. सं. वि. वि., वाराणसी, 1972 में प्रथम तथा 1992 ई. द्वितीय संस्करण ।

(स) शक्तिसंगमतन्त्र, चतुर्थ खण्ड—— (शाक्त तन्त्र)। विस्तृत संस्कृत उपोद्घात तथा परिशिष्ट आदि से संयुक्त, गायकवाड़ शोध संस्थान, बड़ोदरा (गुजरात) से सन् 1978 में प्रकाशित ।

(अ) विज्ञानभैरव—— (काश्मीर का योगशास्त्र) । अन्वयार्था नामक संस्कृत टीका तथा रहस्यार्था नामक विस्तृत हिन्दी व्याख्या से संयुक्त। विस्तृत हिन्दी उपोद्घात तथा परिशिष्ट के साथ। मोतीलाल बनारसी दास, प्रथम संस्करण, सन् 1978, द्वितीय 1984 ई.। उत्तरप्रदेश संस्कृत अकादमी, लखनऊ द्वारा पुरस्कृत ।

(अ) वेदार्थपारिजात—— (शुक्ल यजुर्वेद) अनन्तश्री स्वामी करपात्री जी महाराज विरचित भाष्यभूमिका का हिन्दी अनुवाद । 1979-1980 ई. ।

(स) तन्त्रसंग्रह, चतुर्थ भाग—— सर्वविजयी-गुप्तसाधन-माया-षडाम्नाय-गायत्री-चीनाचार-भूतिशुद्धि नामक छः तन्त्र-ग्रन्थों का संग्राहक। सं. सं. वि. वि. की योगतन्त्र-ग्रन्थमाला में सन् 1981 में प्रकाशित।

(स) सात्वतसंहिता—— (पांचरात्र वैष्णवागम) अलशिंग भट्ट विरचित भाष्य तथा विस्तृत संस्कृत उपोद्घात के साथ सं. सं. वि. वि. ग्रन्थमाला में प्रकाशित । प्रथम संस्करण 1982 ई., द्वितीय 2001.

(र) तन्त्रयात्रा—— तन्त्रागम दर्शन, संस्कृति-साहित्य, विचारविप्रुषः (बिन्दु) और यात्रावर्णन से संबद्ध 76 संस्कृत निबन्धों का संग्रह। उत्तरप्रदेश संस्कृत अकादमी द्वारा प्रदत्त आर्थिक सहायता से प्रकाशित, सन् 1982 ई. ।

(र) आगममीमांसा—— वैष्णव, शैव और शाक्त आगमों का ऐतिहासिक, दार्शनिक एवं सांस्कृतिक विश्लेषण। दिल्ली स्थित लालबहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ (मानित विश्वविद्यालय) से सन् 1982 में प्रकाशित।

(र) लुप्तागमसंग्रह—— (द्वितीय भाग) विविध ग्रन्थों में उद्धृत अनुपलब्ध आगम-तन्त्रशास्त्र के वचनों का संग्रह । लगभग 400 ग्रन्थों और ग्रन्थकारों के ऐतिहासिक, दार्शनिक और सांस्कृतिक दृष्टि के परिचायक 220 पृ. के संस्कृत उपोद्घात के साथ। सं. सं. वि. वि. की योगतन्त्र ग्रन्थमाला में सन् 1983 में प्रकाशित । उत्तरप्रदेश संस्कृत अकादमी द्वारा पुरस्कृत।

(र) आगम और तन्त्रशास्त्र—तन्त्रागम दर्शन और संस्कृति संबन्धी 26 हिन्दी निबन्धों का संग्रह। परिमल पब्लिकेशंस, दिल्ली, सन् 1984.

(स) नेत्रतन्त्र (मृत्युंजयभट्टारक)—क्षेमराज कृत उद्योत व्याख्या के साथ। विस्तृत हिन्दी उपोद्घात। परिमल पब्लिकेशंस, दिल्ली, सन् 1985.

(स) वेदान्तसूत्र श्रीकण्ठभाष्य (चतुःसूत्री भाग)— अप्पय दीक्षित विरचित शिवार्कमणिदीपिका नामक व्याख्या के साथ। शिवधर्म ग्रन्थमाला, जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी से सन् 1986 में प्रकाशित।

(स) गुह्यादि-अष्टसिद्धिसंग्रह— (बौद्ध तन्त्र)। दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध योजना केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी से सन् 1987 में विस्तृत हिन्दी उपोद्घात के साथ प्रकाशित। यहाँ पद्मवज्र की गुह्यसिद्धि, अनन्तवज्र की प्रज्ञोपायविनिश्चयसिद्धि, इन्द्रभूति की ज्ञानसिद्धि, लक्ष्मींकरा की अद्वयसिद्धि, योगिनी चिन्ता की व्यक्तभावानुगततवसिद्धि, डोबी हेरुक की सहजसिद्धि, कुद्दालपाद का अचिन्त्याद्वयक्रमोपदेश और पद्मवज्र (द्वितीय) की अद्वयविवरणप्रज्ञोपायविनिश्चयसिद्धि नामक आठ ग्रन्थों का प्रकाशन हुआ है ।

(स) लिङ्गधारणचन्द्रिका—(वीरशैव) नन्दिकेश्वर शिवाचार्य विरचित। शरद् नामक संस्कृत व्याख्या तथा भाषानुवाद के साथ शिवधर्म ग्रन्थमाला, जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी से सन् 1988 में प्रकाशित ।

(अ) योगिनीहृदय—अमृतानन्द योगी विरचित संस्कृत व्याख्या तथा भाषानुवाद से संवलित। परिशिष्ट भाग में आदिनाथ विरचित परापंचाशिका समाविष्ट । मोतीलाल बनारसीदास, सन् 1988.

(स) ज्ञानोदयतन्त्र—(बौद्ध तन्त्र), दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध योजना, सारनाथ सन् 1988.

(स) अष्टप्रकरण—(सिद्धान्त शैव)। सं. सं. वि. वि. वाराणसी, सन् 1988. यहाँ सद्योज्योति शिवाचार्य विरचित तत्वत्रयनिर्णय, तत्वसंग्रह, भोगकारिका, मोक्षकारिका और परमोक्षनिरासकारिका नामक पाँच ग्रन्थों का, भट्ट रामकण्ठ और अघोरशिव की व्याख्या के साथ; श्रीकण्ठ सूरि कृत रत्नत्रय और भट्ट रामकण्ठ कृत नादकारिका का अघोरशिव कृत व्याख्या के साथ तथा भोजदेव कृत तत्वप्रकाश का दो टीकाओं के साथ प्रकाशन हुआ है।

(र) बौद्ध तन्त्र कोश—(प्रथम भाग) दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध योजना, सारनाथ सन् 1990.

(र) लुप्त बौद्ध वचन संग्रह—(प्रथम भाग) दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध योजना, सारनाथ, सन् 1990.

(स) वसन्ततिलक—(बौद्ध तन्त्र) कृष्णपादविरचित। रहस्यदीपिका नामक व्याख्या के साथ दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध योजना, सारनाथ से सन् 1990 में प्रकाशित ।

(स) डाकिनीजालसंवररहस्य—(बौद्ध तन्त्र) अनंगयोगी विरचित। दु. बौ. ग्र. शोध योजना, सारनाथ सन् 1990.

(स) सम्पादन के सिद्धान्त और उपादान—(कार्यशाला विवरण) । दु. बौ. ग्र. शोधयोजना, सारनाथ, सन् 1990.

(स) कृष्णयमारितन्त्र—(बौद्ध तन्त्र) । कुमारचन्द प्रणीत रत्नावली पंजिका नामक व्याख्या के साथ दु. बौ. ग्र. शोधयोजना, सारनाथ से सन् 1992 में प्रकाशित ।

(स) महामायातन्त्र—(बौद्ध तन्त्र), । रत्नाकरशान्ति प्रणीत गुणवती नामक टीका के साथ दु. बौ. ग्र. शोधयोजना, सारनाथ से सन् 1992 में प्रकाशित।

(स) अभिसमयमंजरी—(बौद्ध तन्त्र) शुभाकर गुप्त विरचित। दु. बौ. ग्र. शोधयोजना, सारनाथ, सन् 1993 .

(स) कालचक्रतन्त्र—(बौद्ध तन्त्र), पुण्डरीक विरचित विमलप्रभा नामक टीका सहित। दु.बौ.ग्र. शोधयोजना, सारनाथ द्वितीय भाग, सन् 1994; तृतीय भाग, सन् 1995.

(स) शु□लयजुर्वेद माध्यन्दिन संहिता—अनन्तश्री स्वामी करपात्री महाराज द्वारा विरचित वेदार्थपारिजात नामक भाष्य से संवलित। श्री राधाकृष्ण धानुका प्रकाशन संस्थान, वृन्दावन द्वारा प्रकाशित। द्वितीय-तृतीय अध्याय संवत् 2046; चतुर्थ-पंचम-षष्ठ अध्याय संवत् 2049; सप्तम से दशम अध्याय पर्यन्त, सं. 2049; एकादश से पंचदश अध्याय पर्यन्त, सं. 2048, षोडश से विंशति अध्याय पर्यन्त, सं. 2048 एवं 21 से 39 वें अध्याय पर्यन्त, संवत् 2048; ये सभी भाग हिन्दी भाषा में लिखित भाष्यनिष्कर्ष से संवलित हैं ।

(र) निगमागम संस्कृति—निगमागम दर्शन, साहित्येतिहास और यात्राविषयक 37 हिन्दी निबन्धों का संग्रह। शिवधर्म ग्रन्थमाला, जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी सन् 1992.

(अ) चन्द्रज्ञानागम—(वीरशैव) क्रिया एवं चर्यापाद, भाषानुवाद, टिप्पणी, प्रस्तावना। शोध प्रकाशन ग्रन्थमाला, जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी, सन् 1994.

(अ) सूक्ष्मागम—(वीरशैव) क्रियापाद, भाषानुवाद, टिप्पणी, प्रस्तावना। शोध प्रकाशन ग्रन्थमाला, जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी, सन् 1994.

(अ) मकुटागम—(वीरशैव) क्रिया एवं चर्यापाद, भाषानुवाद आदि। शोध प्रकाशन ग्रन्थमाला, जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी, सन् 1994.

(अ) पारमेश्वरागम—(वीरशैव) भाषानुवाद, टिप्पणी, प्रस्तावना । शोध प्रकाशन ग्रन्थमाला, जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी, सन् 1995.

(स) उतरषट्क—(त्रिपुरा तन्त्र), कुलदीपिका नामक व्याख्या के साथ। सं.सं.वि.वि., वाराणसी, सन् 1995.

(र) निगमागमीय संस्कृति-दर्शन—निगमागम दर्शन, संस्कृति-साहित्य और विचारविप्रुष:(बिन्दु) से संबद्ध 77 संस्कृत निबन्धों तथा टिप्पणियों का संग्रह। शो. प्र. ग्रन्थमाला, जंगमवाड़ी, वाराणसी, सन् 1995.

(स) भारतीय तन्त्रशास्त्र—(कार्यशाला का विवरण)। दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोधयोजना, केन्द्रीय तिब्बती उच्च शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी, सन् 1995.

(स) ज्ञानदीपविमर्शिनी—(त्रिपुरापद्धति), विद्यानन्द विरचित, परिशिष्ट आदि से संयुक्त। शो. प्र. ग्रन्थ माला, जंगम., वाराणसी सन् 1996 .

(अ) सिद्धान्तप्रकाशिका—(सिद्धान्त शैव) सर्वात्मशंभु विरचित, शैवभारती शोध प्रतिष्ठान, जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी, सन् 1996.

(स) संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास—तन्त्रागम विषयक एकादश खण्ड, उत्तरप्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ, सन् 1997.

(र) भारतीय संस्कृति के नये आयाम—लालबहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ (मानित विश्वविद्यालय), नई दिल्ली, सन् 1997.

(र) वैष्णवागमविमर्श—वैखानस, पांचरात्र और भागवत आगमों का परिचय, सं.सं.वि.वि. वाराणसी, सन् 1997.

(अ) सिद्धान्तसारावलि—(सिद्धान्त शैव) त्रिलोचन शिवाचार्य विरचित, व्याख्या-भाष्य-विस्तृत प्रस्तावना-परिशिष्ट सहित, शैवभारती शोध प्रतिष्ठान, जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी, सन् 1998.

(र) भारतीय दर्शन परिभाषा कोश, शाक्त दर्शन——(तृतीय खण्ड)। वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, मानव संसाधन विकास मन्त्रालय (शिक्षा विभाग), भारत सरकार, नई दिल्ली, सन् 1999.

(अ) गुरुगीता, गुरुपादुकापंचक सहित—श्लोकानुवाद, भाषाभाष्य, परिशिष्ट से संवलित, शै.भा. शो. प्र. जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी, सन् 1999.

(अ) देवीकालोखरागम—(वीरशैव), निरंजनसिद्ध विरचित वृति-भाषानुवाद परिशिष्ट सहित, शै. भा. शो. प्र., जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी, सन् 2000.

(स) सिद्धान्तशिखामणिमीमांसा—(शास्त्रसंगोष्ठी विवरण), शैव भारती शोध प्रतिष्ठान, जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी, सन् 2000.

(र) तन्त्रागमीय धर्म-दर्शन——(दो खण्ड)। वैष्णव-शैव-शाक्त-बौद्ध-जैन-स्मार्त नामक तन्त्रागम शास्त्र की छः शाखाओं का ऐतिहासिक-दार्शनिक सांस्कृतिक विश्लेषण । शै. भा. शो. प्र., जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी सन् 2000-2001.

(स) साख्ययययोगमीमांसा—लेखक एवं अनुवादक, प्रो0 मुकुटबिहारी लाल, शै. भा. शो. प्र., जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी, सन् 2001.

(र) भारतीय संस्कृति का समग्र स्वरूप—नैगमिक-आगमिक-सांस्कृतिक-राजनैतिक विश्लेषण परक 38 निबन्धों का संग्रह, शै.भा. शो. प्र. जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी, सन् 2002.

(र) एक विश्व : एक संस्कृति—विश्वविद्यालय प्रकाशन, विशालाक्षी भवन, चौक, वाराणसी सन् 2003.

(र) भारतीय संस्कृति के मूल तत्व—16 संस्कार, वर्णाश्रम व्यवस्था एवं पुरुषार्थ चतुष्टय का विवेचन, वि. वि. प्रकाशन, चौक, वाराणसी सन् 2003.

(र) भारतीय दर्शन—सांख्य योग, वेदान्त, जैन एवं बौद्ध दर्शन का सामान्य परिचय, वि. वि. प्रकाशन, चौक, वाराणसी सन् 2003.

(अ) वातुलशुद्धात्य तन्त्र—(वीरशैव), भाषाभाष्य-प्रस्तावना-परिशिष्ट संवलित, शै. भा. शो. प्र., जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी सन् 2004.

(र) सांस्कृतिक राष्ट्रवाद—शै. भा. शो. प्रतिष्ठान, जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी, सन् 2004.

(अ) पंचवर्णमहासूत्रभाष्य—शै. भा. शो. प्रतिष्ठान, जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी, सन् 2005.

(र) सर्वागम सार सर्वस्व—शै. भा. शो. प्रतिष्ठान, जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी, सन् 2005.

(अ) शिवपञ्चविंशतिलोकशतक्रम- सन् 2005.

(र) भारत का सांस्कृतिक इतिहास- किशोर विद्यानिकेतन, वाराणसी (प्रेस में)

******